

डॉ. वेंडी एल. विडर, डेनियल, सत्र 4, डेनियल 1

© 2024 वेंडी विडर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डैनियल की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. वेंडी विडर हैं। यह सत्र 4 है, डैनियल 1।

हम इस व्याख्यान में डैनियल 1 को देखने जा रहे हैं।

एक मिनट में, मैं आपके लिए अध्याय पढ़ना चाहता हूँ। बाइबिल का पाठ मुख्य रूप से सुनने के लिए, सुने जाने के लिए लिखा गया था। जब मूल दर्शकों के पास यह होगा, तो उनके पास अपनी प्रतियां नहीं होंगी।

संभवतः केवल सुशिक्षित शास्त्रियों को ही इसकी पहुँच प्राप्त थी। तो, लोगों ने इसे सुना। उन्होंने इसे याद कर लिया।

उन्होंने इसे बार-बार सुना। इसलिए, किसी पाठ की बहुत सारी विशेषताएं सुनने के लिए होती हैं। इसलिए यही एक कारण है कि जब मैं पाठ पढ़ाता हूँ तो उसे पढ़ना पसंद करता हूँ।

लेकिन ऐसा करने से पहले, मैं बाइबल की कहानियों, बाइबल में कहानियों या बाइबल में इतिहास को पढ़ने के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। कभी-कभी हम बाइबल को पढ़ते हैं और हम इसे ऐतिहासिक घटनाओं की सूची के रूप में सोचते हैं जो घटित हुई हैं। यह हमें बस इज़राइल का इतिहास बता रही है।

कुछ लोग बाइबल को इस तरह पढ़ते हैं जैसे कि यह कोई विज्ञान की किताब हो। यह हमें बताती है कि परमेश्वर ने कुछ खास काम कैसे किए। कुछ लोग इसे इस तरह पढ़ते हैं जैसे कि यह सिर्फ अच्छी कहानियों का एक समूह हो।

बाइबल के पाठ तक पहुँचने के लिए लोग कई अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम इसे शुरू करते समय यह समझें कि बाइबल की कहानी, चाहे वह इतिहास हो या न हो, चाहे आप उस पर कोई भी राय रखते हों, सिर्फ घटनाओं की सूची नहीं है। यह साहित्य का एक सावधानीपूर्वक तैयार किया गया टुकड़ा है जिसका उद्देश्य संभवतः एक या दो मुख्य बिंदुओं को व्यक्त करना है।

बाइबिल के मामले में, वे धर्मशास्त्रीय हैं। तो, बाइबिल इतिहास है, ऐतिहासिक है। यह साहित्य है, और यह धर्मशास्त्र है।

तो, ये तीनों चीज़ें एक ही किताब में हैं। धर्मशास्त्र के रूप में, इससे हमारा तात्पर्य यह है कि यह ईश्वर के बारे में एक शब्द है। यह ईश्वर का स्वयं के प्रति, अपने बारे में अपने लोगों के प्रति आत्म-प्रकटीकरण है।

कभी-कभी हम उस विचार में खो जाते हैं और हम सोचने लगते हैं कि यह बाइबल में बताए गए लोगों के बारे में है। यह नायकों और खलनायकों या घटित घटनाओं के बारे में है। यह उन लोगों के बारे में है, लेकिन यह वास्तव में लोगों के जीवन के माध्यम से इतिहास में भगवान के कार्यों के बारे में है।

तो, क्या यह ऐतिहासिक है? निश्चित रूप से, यह ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह इसका मुख्य बिंदु नहीं है। इसका उद्देश्य हमें इतिहास पढ़ाना नहीं है। इसका उद्देश्य हमें यह दिखाना होगा कि भगवान इतिहास के माध्यम से कैसे काम करता है, और वह सावधानीपूर्वक तैयार की गई कहानियों में ऐसा करता है।

इसलिए, जब मैं बाइबिल की कथा का अध्ययन कर रहा होता हूँ और बाइबिल को कैसे पढ़ा जाए इसके बारे में सोचता हूँ तो एक परिभाषा जो मैं अपने दिमाग में रखना चाहता हूँ वह यह है कि बाइबिल के लेखक, यानी, मानव लेखक जिन्होंने इसे भगवान की देखरेख में लिखा था, वह बाइबिल के लेखक हैं ईश्वर के आत्म-प्रकाशन को संप्रेषित करने के लिए साहित्यिक तकनीकों के माध्यम से रचनात्मक रूप से ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में बात करें। तो यह हमें ऐतिहासिक टुकड़ा, साहित्य टुकड़ा देता है, लेकिन फोकस यह है कि यह एक किताब है जो हमें भगवान के बारे में सिखाने के लिए बनाई गई है। यह हमारे लिए ईश्वर का रहस्योद्घाटन है।

इसलिए, हम बाइबल को अच्छा साहित्य बनने देना चाहते हैं। यह अच्छा साहित्य है। यह महान साहित्य है।

हम इसे अच्छी तरह से तैयार की गई कहानियों की अनुमति देना चाहते हैं और उन कहानियों का भरपूर उपयोग करना चाहते हैं जो हम कर सकते हैं। लेकिन हमें याद रखना होगा कि यह हमें ईश्वर के बारे में सिखा रहा है। यह रहस्योद्घाटन है।

यह परमेश्वर का स्वयं-प्रकाशन है। ठीक है, तो चलिए अध्याय एक, दानियेल अध्याय एक पढ़ते हैं। मैं अंग्रेजी मानक संस्करण से पढ़ रहा हूँ।

मैं आमतौर पर, जब मैं अध्ययन करता हूँ, तो इस संस्करण या न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड संस्करण का उपयोग करना पसंद करता हूँ क्योंकि वे मुझे मूल हिब्रू क्या है यह बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं। वे हमेशा सबसे अधिक पठनीय अनुवाद नहीं होते हैं। इसके लिए मैं शायद NIV का उपयोग करूँगा।

लेकिन जब मैं यह जानने की कोशिश करता हूँ कि मूल शब्द क्या थे और शायद लेखक ने उन्हें कैसे एक साथ गढ़ा, तो मैं ESV या NASV जैसी किसी चीज़ का इस्तेमाल करना पसंद करता हूँ। और मेरे पास ESV है। ठीक है, डैनियल एक।

1 यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर आकर उसे घेर लिया। 2 और यहोवा ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कुछ पात्रोंसमेत उसके हाथ में कर दिया। और वह उन्हें शिनार देश में अपने देवता के

भवन में ले आया, और उन पात्रों को अपने देवता के भण्डार में रख दिया। **3** तब राजा ने आपके प्रधान खोजे अशपनज को आज्ञा दी, कि इस्राएली प्रजा में से, राजकुल के और कुलीनोंमें से कुछ को ले आए, **4** युवा निर्दोष, अच्छे रूप वाले और सभी प्रकार की बुद्धि में निपुण, ज्ञान से संपन्न, विद्या को समझने वाले और राजा के महल में खड़े होने और उन्हें कसदियों का साहित्य और भाषा सिखाने में सक्षम थे। **5** राजा ने उन्हें प्रतिदिन उस भोजन का एक भाग सौंपा जो राजा खाता था, और जो दाखमधु वह पीता था। उन्हें तीन साल तक शिक्षा दी जानी थी और उस समय के अंत में, उन्हें राजा के सामने खड़ा होना था। **6** इनमें यहूदा के गोत्र के दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह थे। **7** और खोजों के प्रधान ने उनके नाम रखे; दानिय्येल को उस ने बेल्टशस्सर कहा, हनन्याह को उस ने शद्रक कहा, मीशाएल को उस ने मेशक कहा, और अजर्याह को उस ने अबेदनगो कहा।

8 परन्तु दानिय्येल ने निश्चय किया कि वह राजा का भोजन या उसके द्वारा पीयी हुई दाखमधु पीकर अपने आप को अशुद्ध नहीं करेगा। इसलिए, उसने खोजों के मुखिया से प्रार्थना की कि वह उसे स्वयं को अशुद्ध न करने दे। **9** और परमेश्वर ने दानिय्येल को खोजों के प्रधान की दृष्टि में अनुग्रह और करुणा दी, **10** और खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा, मैं अपने प्रभु राजा का भय मानता हूँ, जिस ने तेरा भोजन और पेय ठहराया है; तुम्हारी हालत उन युवकों से भी बदतर थी जो तुम्हारे ही उम्र के हैं? तो तुम राजा के साथ मेरा सिर खतरे में डालोगे।” **11** तब दानिय्येल ने उस भण्डारी से कहा, जिसे खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह पर नियुक्त किया था, **12** “दस दिन तक अपने दासों को परखो; हमें खाने के लिए सब्जियाँ और पीने के लिए पानी दिया जाए। **13** तब हमारा रूप और राजा का भोजन खाने वाले जवानों का रूप तुम देखना, और जैसा तुम देखोगे उसी के अनुसार अपने सेवकों से व्यवहार करना।” **14** इसलिये उस ने इस विषय में उन की सुनी, और दस दिन तक उनको परखा। **15** दस दिन के अन्त में यह देखा गया कि राजा का भोजन खाने वाले सब युवकों से वे दिखने में अच्छे और शरीर में मोटे थे। **16** इसलिये भण्डारी ने उनका भोजन और वह दाखमधु जो उन्हें पीना था ले लिया, और उन्हें सब्जियाँ दीं।

17 और उन चारों युवकों को परमेश्वर ने सब प्रकार की विद्या और बुद्धि दी, और दानिय्येल को सब प्रकार के दर्शन और स्वप्नों की समझ दी। **18** जब राजा ने उन्हें भीतर लाने की आज्ञा दी, तब खोजों के प्रधान ने उन्हें नबूकदनेस्सर के सामने भीतर ले जाकर खड़ा किया। **19** और राजा ने उन से बातें कीं, और उन में दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य कोई न निकला, इसलिये वे राजा के सामने खड़े हुए। **20** और बुद्धि और समझ के जितने विषय राजा ने उन से पूछे, उन सभी में वे उसके राज्य भर के सब जादूगरों और तंत्र-मंत्रियों से दसगुणे निपुण निकले। **21** और दानिय्येल राजा कुसू के प्रथम वर्ष तक वहीं रहा।

ठीक है, तो अध्याय एक में, डैनियल और उसके दोस्तों को कैद में ले लिया गया है। अध्याय की शुरुआत इस ऐतिहासिक परिदृश्य से होती है। यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में।

इसलिए, यदि आपको पहले के कुछ व्याख्यान याद हैं, तो हम बाइबिल की समयरेखा के आधार पर डैनियल की पुस्तक की सेटिंग देख रहे थे और यह यहूदी इतिहास में कैसे आती है। और जब हम ऐसा करेंगे, तो हम यहां एक संक्षिप्त संस्करण तैयार करेंगे। जब हम यहां पहुंचे, तो यह 609

ईसा पूर्व था, राजा योशियाह दक्षिणी राज्य का राजा है और वह अशूरियों को बेबीलोनियों के खिलाफ लड़ने में मदद करने, या बेबीलोनियों से लड़ने के रास्ते में है।

और रास्ते में फिरौन ने उसे मार डाला। उसका पुत्र यहोआहाज तीन महीने तक राजा रहा, जब तक फिरौन ने उसे पदच्युत नहीं किया और योशियाह का दूसरा राजा पुत्र नहीं बनाया। तो, आइए यहां नज़र रखें।

तो, योशियाह मर जाता है, और उसका पुत्र यहोआहाज केवल तीन महीने के लिए सिंहासन पर आता है जब तक कि फिरौन नको उसे पदच्युत नहीं कर देता, और योशियाह का दूसरा पुत्र राजा नहीं बन जाता। तो, उसके नहीं, हम बेटे नंबर दो, यहोयाकीम के पास जाते हैं। क्या वह सही है? हाँ, यहोयाकिम नया राजा है, और वह मिस्र का जागीरदार था, या दक्षिणी राज्य था जब नबूकदनेस्सर ने मिस्रियों को हराया था।

मैं यहाँ बहुत सारा इतिहास संक्षेपित कर रहा हूँ। मुझे धीमा करने दो. यहोयाकीम तीन साल तक नबूकदनेस्सर के अधीन बेबीलोन का जागीरदार था, और फिर उसने विद्रोह कर दिया। जब उसने बेबीलोन के विरुद्ध विद्रोह किया, तो नबूकदनेस्सर यरूशलेम आया, जो लगभग 598-597 ईसा पूर्व रहा होगा, और यह 2 राजाओं में दर्ज है।

तो, 598-597 ईसा पूर्व में, नबूकदनेस्सर का क्रोध यहोयाकिम पर विद्रोह करने के लिए उतरा, यह 2 राजा 24 में है। ऐसा प्रतीत होता है कि यहोयाकीम यहीं रास्ते में कहीं मर गया, और हमें ठीक से नहीं बताया गया कि उसके साथ क्या हुआ, लेकिन अचानक, पाठ में उसका पुत्र यहोयाकीम राजा है। तो, वह मर गया, वह राजा है, और उसे निर्वासन में बेबीलोन ले जाया गया है।

राजा बनने के तीन महीने के भीतर ही वह आत्मसमर्पण कर देता है। इसलिए वह बेबीलोन चला गया। तो अब भी हमें यहाँ एक राजा की आवश्यकता है।

तो अब हमें बेटा नंबर तीन मिलता है, जो राजा बनने जा रहा है, और यह सिदकियाह है, वह नया राजा है। तो, योशियाह 609 में था, वह मर गया, बेटा नंबर एक राजा बन गया, उसे पदच्युत कर दिया गया, बेटे नंबर दो को राजा बनाया गया, वह मर गया, उसका बेटा राजा बन गया, उसे निर्वासन में ले जाया गया, और योशियाह का तीसरा बेटा राजा बन गया। यरूशलेम वास्तव में सिदकियाह के अधीन हो जाएगा इसलिए हम यहां राजाओं के अंत के करीब हैं।

भूगोल के संदर्भ में, भूमध्य सागर, नील नदी, मिस्र, यहाँ बीच की भूमि है, गैलिली सागर, जॉर्डन नदी, मृत सागर, फारस की खाड़ी, टिगरिस और फ़रात, इसलिए हम यहाँ बेबीलोन में हैं। याद रखें, हमारे पास यह सत्ता संघर्ष है, इसलिए हमारे पास बेबीलोन और मिस्र हैं, और हर बार जब वे संघर्ष करते हैं, तो इज़राइल बीच में होता है। आप कह सकते हैं, अच्छा, वे इस तरफ क्यों नहीं जाते? खैर, यह सब रेगिस्तान है।

तो, सारी यात्रा इसी तरह से होती है, सीधे इज़राइल से होकर। तो, इज़राइल का इतिहास कई मायनों में साम्राज्यों के बीच सत्ता संघर्ष पर निर्भर है। वे उस समय के राजा या सत्ताधारी की दया पर निर्भर हैं।

तो, दानियेल 1 की पहली आयत में, हम यहीं पर हैं। हम इन दोनों के बीच सत्ता संघर्ष में हैं, और यहोयाकीम गायब हो जाता है, लेकिन वह घेर लिया गया है। यरूशलेम को नबूकदनेस्सर ने घेर लिया है।

कालक्रम के अनुसार, यह 605 है। इसलिए, यहोयाकीम का तीसरा वर्ष 605 ईसा पूर्व है। यह हमारे लिए एक ऐतिहासिक कठिनाई है।

और इसलिए, यहोयाकीम के तीसरे वर्ष में समस्या यह है। नबूकदनेस्सर, जो बेबीलोन का राजा है, मुझे इन सभी मृत राजाओं से छुटकारा दिलाना चाहिए। हम यहोयाकीम और नबूकदनेस्सर के साथ रहेंगे।

605 ई.पू., यह यहोयाकीम का तीसरा वर्ष है। नबूकदनेस्सर बेबीलोन में सिंहासन पर तब बैठा जब उसके पिता, नबोपोलास्सर, जिसे आपको याद रखने की ज़रूरत नहीं है, की मृत्यु हो गई। रुकिए, मुझे यहाँ अपने नोट्स को व्यवस्थित करने दीजिए।

इसलिए, 605 ईसा पूर्व में इस घेराबंदी के होने के लिए, नबूकदनेस्सर की सेना को सीरिया-फिलिस्तीन में होना चाहिए था। कालक्रम के साथ यह मुश्किल है क्योंकि, बेबीलोन के अभिलेखों के अनुसार, हम वास्तव में उस समय यहाँ नबूकदनेस्सर को नहीं देखते हैं। और इसमें यह उल्लेख नहीं है कि उसने यरूशलेम की घेराबंदी की या उस पर विजय प्राप्त की।

उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। वह वास्तव में सेना का जनरल है। और उनके पिता अब भी राजा हैं।

जब वह यहां सीरिया-फिलिस्तीन में घूम रहा है तो वह दूसरे नंबर पर है। जब वह इस अभियान पर था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई, और वह राज्याभिषेक के लिए घर चला गया। और समय की एक बहुत छोटी खिड़की है जिसमें यह ऐतिहासिक घेराबंदी हो सकती थी।

यह संभव है कि डैनियल का लेखक घटनाओं को समेकित कर रहा है, इतिहास के एक पूरे समूह को एक साथ कुचल रहा है। एक और संभावना यह है कि हम समय, आरोहण वर्ष और शासक वर्ष रिकॉर्ड करने के विभिन्न तरीकों का उपयोग कर सकते हैं। तो, दानियेल 1:1 में, हमें बताया गया है कि यह यहोयाकीम का तीसरा वर्ष है।

तो, दानियेल 1.1 605 ईसा पूर्व में सेट है, जो यहोयाकीम का तीसरा वर्ष है। हमें इसमें कठिनाई होती है क्योंकि यदि आप यिर्मयाह 25, पद 1 में वापस जाते हैं, तो यिर्मयाह 25 यहोयाकीम के चौथे वर्ष को नबूकदनेस्सर के पहले वर्ष के रूप में संदर्भित करता है। इसलिए, यदि यहोयाकीम का चौथा वर्ष नबूकदनेस्सर का पहला वर्ष है, तो हमारे यहाँ जो है वह यह है कि नबूकदनेस्सर ने राजा बनने से पहले संभवतः किसी चीज़ की घेराबंदी की थी।

और दानिय्येल की पुस्तक में उसे बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर बताया गया है। तो, यह एक असंगति है जिसे समझने में हमें थोड़ी परेशानी होती है। विद्वानों द्वारा इसे सुलझाने का एक तरीका यह है कि स्वर्गारोहण के वर्षों या राजा के सिंहासन पर चढ़ने के लिए अलग-अलग तरीके हैं।

तो, हमारे पास बेबीलोन की व्यवस्था है, जो हमें लगता है कि डैनियल 1:1 में दिखाई देती है। और बेबीलोन की व्यवस्था में, आपके पास एक राजा का सिंहासन पर चढ़ना एक वर्ष का होता है। और फिर उसका आधिकारिक पहला वर्ष वास्तव में सिंहासन पर उसका दूसरा वर्ष होता है। और फिर हमारे पास उसका दूसरा वर्ष और उसका तीसरा वर्ष होता है।

इसलिए, उनके स्वर्गारोहण वर्ष को एक अलग वर्ष के रूप में गिना जाता है, वर्ष एक, वर्ष दो, वर्ष तीन। यह राज्य वर्षों की गणना करने की बेबीलोन प्रणाली है। यहूदिया प्रणाली, जिसे हम सोचते हैं कि हमने यिर्मयाह में प्रतिबिंबित किया है, इसे थोड़ा अलग तरीके से करती है।

तो, यहूदी धर्म में वर्षों की गणना करने के तरीके में, स्वर्गारोहण वर्ष पहले वर्ष के समान ही होता है। तो, वे सिंहासन पर आते हैं, और वह भी वर्ष एक, वर्ष दो, और वर्ष तीन होता है। और फिर, जब तक आप यहाँ पहुँचते हैं, आप वर्ष चार में होते हैं।

तो, सिंहासन पर वर्षों के लिए लेखांकन की दो अलग-अलग प्रणालियाँ दानिय्येल की पुस्तक में या यिर्मयाह की पुस्तक में दर्शाई गई हैं। इसलिए, जब हम कहते हैं कि यह यहोयाकीम का तीसरा वर्ष था, तो वह बेबीलोन की प्रणाली है। जब यिर्मयाह अपने चौथे वर्ष के बारे में बात करता है, तो वह यहूदियन प्रणाली है।

तो, यह सिंहासन पर एक ही वर्ष के बारे में बात कर रहा है, बस इसे संप्रेषित करने के अलग-अलग तरीके हैं। तो यही वह तरीका है जिससे लोग इस तिथि की कठिनाई को समझाते हैं। तो 605 में यहोयाकीम का तीसरा वर्ष नबूकदनेस्सर के स्वर्गारोहण वर्ष के साथ मेल खाता है।

फिर से, कठिनाई यह है कि 605 में यरूशलेम की घेराबंदी के लिए ऐतिहासिक साक्ष्य की कमी है। बेबीलोन के अभिलेखों में वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस समय नबूकदनेस्सर को वहाँ रखता हो। यह उसके लिए एक बहुत ही तंग कालक्रम है।

हम जानते हैं कि वह 605 की शुरुआत में सीरिया-फिलिस्तीन में था, लेकिन यरूशलेम या यहोयाकिम के रिकॉर्ड में इसका कोई उल्लेख नहीं है। उसी वर्ष उसके पिता की मृत्यु हो गई, और वह अपने राज्याभिषेक के लिए घर चला गया। 605 में सीरिया-फिलिस्तीन में एक अभियान के समय और 605 में उनके राज्याभिषेक के बीच, यह एक बहुत ही तंग खिड़की है।

हालाँकि, आप कह सकते हैं कि डैनियल 1.1 को वास्तव में नबूकदनेस्सर की उपस्थिति की आवश्यकता नहीं है। वह राजा हो सकता है, और यदि उसकी सेना ने आक्रमण किया है, तो आपको यह नहीं कहना पड़ेगा कि नबूकदनेस्सर की सेना ने आक्रमण किया है; यह

नबूकदनेस्सर है जिसने आक्रमण किया है। इसके लिए औपचारिक सैन्य घेराबंदी की भी आवश्यकता नहीं है।

वहां हिब्रू में जिस शब्द का प्रयोग किया गया है उसका मतलब केवल शत्रुता दर्शाना हो सकता है। यह एक तर्क है जो 80 के दशक के एक विद्वान और टेम्पर लॉन्गमैन द्वारा दिया गया था, जिन्होंने इसे विश्वसनीय पाया। तो, इस मामले में, नबूकदनेस्सर वास्तव में उस पर हमला किए बिना यहोयाचिन को आत्मसमर्पण करने के लिए मना सकता था।

इसलिए, शत्रुता के कार्य, चाहे वे कुछ भी हों, उसे अपने लोगों के प्रति हिंसा के बिना हार मानने के लिए मनाने के लिए पर्याप्त हो सकते थे। तो, दानिय्येल 1:1 वफादारी में बदलाव की बात कर सकता है। इसलिए यहोयाकीन ने फैसला किया कि वह मिस्र के जागीरदार की ओर लालसा से देखने के बजाय नबूकदनेस्सर के प्रति वफादार रहेगा।

एक और बात यह है कि तीसरा वर्ष नहीं है, हो सकता है कि यहोयाकीन के तीसरे वर्ष का यह संदर्भ उसके शासनकाल के तीसरे वर्ष या यहां तक कि उसके दासत्व के तीसरे वर्ष का संदर्भ न हो, लेकिन यह तीसरे वर्ष का संदर्भ हो सकता है 601 में यहूदी स्वतंत्रता का दावा करने के लिए उन्होंने नबूकदनेस्सर के खिलाफ विद्रोह किया। यदि ऐसा मामला है, तो डैनियल 1 में वर्णित यह घेराबंदी वही है जिसका वर्णन 2 किंग्स में किया गया है जो 597 में हुआ था। इसलिए, इससे निपटने के विभिन्न तरीके हैं, जिसे ऐतिहासिक कठिनाई कहा जाता है।

दिन के अंत में, यह अध्याय के बिंदु को प्रभावित नहीं करता है, लेकिन यह उन चीजों में से एक है जिसके बारे में आपको अपने तरीके से सोचना होगा और पाठ का क्या अर्थ हो सकता है इसके लिए विभिन्न संभावनाओं को सुलझाना होगा। बहस के बारे में एक बात जो वास्तव में आकर्षक है वह यह है कि यहोयाचिन का तीसरा वर्ष उसके विद्रोह के बाद तीसरे वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। तो, उसने 601 में विद्रोह किया, तीन साल बाद, 597, 598, जब नबूकदनेस्सर आया और वास्तव में लोगों को फिर से बंदी बना लिया, वह 598 होगा, और यह वही घेराबंदी होगी जिसके लिए बहुत सारी ऐतिहासिक सामग्री है।

दिलचस्प बात यह है कि डैनियल की किताब में पहले और तीसरे वर्ष के बहुत सारे संदर्भ हैं। तो, यहाँ हम यहोयाकीन के तीसरे वर्ष में हैं। जब हम दानिय्येल 7 और दानिय्येल 8 तक पहुँचते हैं, तो हमारे पास बेलशस्सर का पहला वर्ष और बेलशस्सर का तीसरा वर्ष होता है।

हमारे पास साइरस का पहला वर्ष, डेरियस मेडे का पहला वर्ष और साइरस का तीसरा वर्ष है। तो गोल्लिंगे ने वास्तव में एक तर्क दिया है कि यह राजा के शासनकाल की शुरुआत में, या राजा के शासनकाल की शुरुआत में, और राजा के शासनकाल के बहुत दूर तक संदर्भित करने का पाठ का तरीका हो सकता है। तो एक सटीक तारीख होने के बजाय, यह सिर्फ कहने का एक साहित्यिक तरीका हो सकता है, एह, शुरुआत के करीब, एह, कुछ समय के लिए राजा होने के बाद।

यह संभव है। तो, हम डैनियल में पहले और तीसरे, तीसरे, पहले के पैटर्न को देखते हैं। तो यह संभव है. यहाँ यही हो रहा है.

दूसरी संभावना यह है कि डैनियल 1:1 बंदियों के इस निर्वासन को संक्षिप्त कर रहा है, 587 में एक, और फिर अंतिम, या क्षमा करें, 597, और फिर 587। तो, आपके पास डैनियल के लेखक के अनुसार तीन अलग-अलग निर्वासन हो सकते हैं हो सकता है कि 1 सब कुछ एक ही गांठ में डाल रहा हो। उसे इसकी चिंता नहीं है कि ये सब कब और कैसे हुआ।

उसे बस इस बात की चिंता है कि यरूशलेम का पतन हो गया है। और लोग बन्धुवाई में चले गए। सटीक वर्ष चाहे जो भी हो, और यहोयाकिम के तीसरे वर्ष का क्या अर्थ हो सकता है, डैनियल 1.1 पुस्तक की घटनाओं के लिए शुरुआती बिंदु निर्धारित करता है।

विशेष रूप से अध्याय एक से छह तक की कथात्मक कहानियों के लिए। डैनियल 1.21, जो डैनियल की सेवा का संदर्भ है, डैनियल साइरस के पहले वर्ष तक अदालत में था। यह हमें अंतिम बिंदु देता है।

और वास्तव में, यह लागू निर्वासन की अवधि है। तो, मेरे कहने का मतलब यह है कि बेबीलोन ने लोगों को बंदी बनाना शुरू कर दिया, मान लीजिए, 605, और जब साइरस 539 में फारसियों के राजा बने तो उन्होंने उन्हें जाने की अनुमति दी। यह लागू निर्वासन की अवधि है, जब लोग अपनी भूमि में स्वतंत्र नहीं होते हैं, और फिर उन्हें 539 में अपनी भूमि पर वापस जाने की अनुमति दी जाती है।

तो संभवतः डैनियल 1 में तारीखों के साथ यही हो रहा है। इसलिए, यहोयाकीम के तीसरे वर्ष में, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने आकर उसे घेर लिया। यहोवा ने यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कुछ पात्रों में से कुछ दिया। भगवान के घर के ये बर्तन पांचवें अध्याय में फिर से प्रकट होंगे जब बेलशस्सर चित्र में प्रवेश करेगा।

यह उसे बहुत परेशानी में डालने वाला है। और ईमानदारी से, मुझे लगता है कि हममें से बहुतों के लिए इन जहाजों का कोई मतलब नहीं है। यदि हमारे चर्चों के पास ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग वे साम्यवाद या अन्य किसी चीज़ के लिए करते हैं, तो वे ऐसी चीज़ नहीं हैं जिन्हें हम एक पवित्र बर्तन के रूप में देखते हैं।

यह कुछ ऐसा है जिसका हम उपयोग करते हैं। हम उन्हें धोते हैं, दूर रख देते हैं, अगले महीने उन्हें बाहर लाते हैं, उनका उपयोग करते हैं, उन्हें धोते हैं, उन्हें दूर रख देते हैं। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम इस तरह देखते हैं जैसे कि यह एक पवित्र, पवित्र वस्तु है।

लेकिन यहूदियों के लिए उनके मंदिर में वे वस्तुएँ बहुत पवित्र थीं। इतना ही नहीं, वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि ऐतिहासिक किताबों में लिखा है कि ये जहाज कहां जाते हैं। जब आप 2 इतिहास 36 और यिर्मयाह 52 पढ़ते हैं, तो वे निर्वासन में जाने वाले लोगों के बारे में बात कर रहे हैं।

इसमें यह भी बताया गया है कि कितने जहाज़ गए। तो, लोग गए, हाँ, लेकिन इन सभी जहाजों को देखो जो गए। निर्वासन के दूसरी ओर, निर्वासन के बाद की किताबें उन जहाजों के वापस आने के बारे में बात करती हैं।

इसलिए, जिन कारणों से हम अक्सर इनका महत्व नहीं समझ पाते, ये जहाज़ यहूदी लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। कई मायनों में, वे पुनर्स्थापना की उनकी आशा का प्रतिनिधित्व करते हैं। तो, यिर्मयाह ने वादा किया था, या उसने लोगों से कहा था, आप निर्वासन में जाने वाले हैं? ये झूठे भविष्यवक्ता जितना कह रहे हैं, यह उससे कहीं अधिक समय तक चलने वाला है।

बर्तन तो चले जाएंगे, और वहीं रहेंगे। लेकिन परमेश्वर बर्तनों को वापस लौटा देगा। और इसलिए, उन लोगों के लिए, परमेश्वर के साथ उनके वाचा सम्बन्ध से यही एकमात्र ठोस चीज़ बची थी।

मंदिर नष्ट हो गया है, पवित्र शहर नष्ट हो गया है, लेकिन वे बर्तन बचे हुए हैं। और इसलिए, वे इन लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन भगवान ने इनमें से कुछ बर्तनों को बेबीलोन ले जाने की अनुमति दी है।

खैर, यह वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है। इसलिए, प्रभु ने कुछ बर्तन नबूकदनेस्सर के हाथ में दे दिए, और वह उन्हें अपने परमेश्वर के भवन में ले गया। प्राचीन दुनिया में, जब राजा एक दूसरे के खिलाफ युद्ध करने जाते हैं, तो यह सिर्फ एक सैन्य लड़ाई नहीं होती है।

यह एक धार्मिक लड़ाई है। एक राजा अपने भगवान का प्रतिनिधित्व करता है, और वह अपने भगवान के क्षेत्र का विस्तार करने, अपने भगवान की शक्ति का विस्तार करने के लिए अपने भगवान की ओर से लड़ने जा रहा है। यह एक धार्मिक संघर्ष है।

इसलिए, जब नबूकदनेस्सर इस्राएल के परमेश्वर को हरा देता है, या जब नबूकदनेस्सर यहोयाकीम को हरा देता है, तो यह देखने वाले हर किसी को प्रतीत होता है कि बेबीलोन के परमेश्वर ने इस्राएल के परमेश्वर को हरा दिया है। यह बहुत बड़ी बात है। यह यूं ही नहीं है, हम लड़ाई हार गये।

हमारा भगवान दूसरे जितना मजबूत नहीं है। भगवान ने ऐसा क्यों होने दिया? हमारा परमेश्वर कैसे पराजित हो सकता है? यह एक धार्मिक बात है। और इसलिए, इन जहाजों को नबूकदनेस्सर के भगवान के घर में स्थानांतरित किया जा रहा है।

ध्यान दें कि नबूकदनेस्सर उन्हें कहाँ रखता है। वह उन्हें अपने घर नहीं ले जाता। वे उसके नहीं हैं।

विजयी ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, वह पराजित ईश्वर के जहाजों को ला रहा है और उन्हें अपने ईश्वर के पवित्र स्थान में ठीक उसी स्थान पर रख रहा है जहां वे हैं। तो, जहाजों का यह स्थानांतरण दर्शाता है कि धर्म के संदर्भ में यहां क्या दांव पर लगा है। यह बेबीलोन का परमेश्वर है।

यह मर्दुक द्वारा इस्राएल के ईश्वर को पराजित करना है। या ऐसा प्रतीत होता है। यदि आप पाठ को ध्यान से पढ़ें या पाठ को ध्यान से सुनें, तो ऐसा नहीं लिखा है।

इसमें यह नहीं कहा गया है कि नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम को हराया। इसमें कहा गया है कि नबूकदनेस्सर यरूशलेम आया और उसे घेर लिया और प्रभु ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को

परमेश्वर के भवन के कुछ बर्तनों के साथ उसके हाथ में दे दिया। तो फिर नबूकदनेस्सर क्यों जीता? क्योंकि परमेश्वर ने उसके राजा को सौंप दिया।

परमेश्वर ने अपने बर्तन सौंप दिए। परमेश्वर ने उन्हें उसे दे दिया। इसलिए, ज़मीन पर हालात खराब दिख सकते हैं, और दिखावट से ऐसा लग सकता है कि इस्राएल का परमेश्वर हार गया है।

लेकिन कथावाचक ऐसा नहीं कहता। कथावाचक कहता है कि इस्राएल का परमेश्वर इस पर नियंत्रण रखता है। उसने उन्हें सौंप दिया।

नियंत्रण उसी के पास है। इसलिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण कथन है। यह सिर्फ़ राजा बनाम राजा का मामला नहीं है।

यह एक भगवान है, पूंजी जी, बनाम एक भगवान, छोटा जी। ऐसा लगता है कि छोटे जी भगवान ने जीत हासिल कर ली है। लेकिन डैनियल के लेखक उस विचार को कायम नहीं रहने देते। नबूकदनेस्सर नहीं जीता।

मर्दुक नहीं जीता है। श्लोक तीन से सात में, हम नबूकदनेस्सर के अलावा, मुख्य पात्रों से मिलते हैं। हमारे पास अशपनेज़ है, जो अदालत के अधिकारियों का प्रमुख है।

तो, उसे कुछ हद तक शाही अधिकार प्राप्त है। हमें बिल्कुल यकीन नहीं है कि उसने क्या किया होगा, लेकिन वह इसराइल के कुछ कुलीन लोगों को बेबीलोन वापस लाने के लिए यहां के राजा के आदेशों का पालन करता है। और इन युवाओं को बेबीलोन लाने का उद्देश्य उन्हें शिक्षित करना है।

अब, वे उन्हें क्यों शिक्षित करना चाहेंगे? यह सिर्फ़ स्कूल जाने और बहुत सी चीज़ें सीखने के बारे में नहीं है ताकि आप एक अच्छी नौकरी पा सकें। यह बेबीलोन में स्कूल जाना है ताकि हम आपको अपने मूल्यों, अपनी भाषा और साहित्य के अनुसार संस्कृति से परिचित करा सकें। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? खैर, वे इन लोगों को बंदी बना रहे हैं।

एक काम यह किया जा सकता था कि इन लोगों को उत्कृष्ट सिविल सेवक बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाए; उनके विद्रोह करने और घर वापस जाने की संभावना कम होगी। उनके पास बेबीलोन में अच्छी नौकरियाँ हैं, है न? और उनकी मातृभूमि के विद्रोह करने की संभावना शायद कम होगी क्योंकि वे चाहते हैं कि उनके परिवार के सदस्य बेबीलोन में सुरक्षित रहें। वे शायद राजनयिक बंधकों की तरह हैं।

और ये युवा शायद किशोर हैं। हमें उनकी उम्र के बारे में ठीक से नहीं बताया गया है, लेकिन वे ज़्यादा सीखने लायक हैं। वे ज़्यादा समय तक सेवा दे सकते हैं।

और नबूकदनेस्सर फसल की मलाई निकाल लेता है। वह उन्हें शिक्षित करना चाहता है। वह चाहता है कि वे उसकी सेवा में रहें।

इसलिए, वह उन्हें इस मेज़बान देश की भाषा और साहित्य सिखाते हैं। और बेबीलोनियाई भाषा संभवतः अक्काडियन थी, जिसे सीखना वास्तव में कठिन भाषा है। शुक्र है, मुझे इसे सीखना नहीं पड़ा।

मैं खुश हूँ। लेकिन यह बहुत कठिन भाषा है। और उन्हें अक्काडियन सीखने का कारण यह है कि उनकी कहानियों और इतिहास का बहुत सारा सांस्कृतिक संग्रह, यह सब अक्काडियन में लिखा गया है।

यह संभवतः इसी के अनुरूप है कि यदि आप शास्त्रीय इतिहास का अध्ययन करना चाहते हैं, तो आपको वास्तव में लैटिन सीखना होगा। आपको इसे मूल रूप से लैटिन में पढ़ना होगा। इसलिए, इन युवाओं को अक्काडियन सिखाया गया।

उन्हें इसमें महारत हासिल करनी थी। लेकिन भाषा में महारत हासिल करने के साथ-साथ वे साहित्य में भी महारत हासिल कर रहे हैं। वे बेबीलोन के मिथकों, विश्वासों, विश्वदृष्टिकोण पर महारत हासिल कर रहे हैं।

नबूकदनेस्सर इन युवाओं को सर्वोत्तम सेवक बनाना चाहता है। वह चाहता है कि उन्हें वास्तव में अच्छे बेबीलोनियन बनने के लिए दिमाग लगाया जाए। वह उन्हें उनकी मातृभूमि से ले गया है।

वह चाहता है कि वे अच्छे बेबीलोनवासी बनें। इसका दूसरा हिस्सा यह आहार है जो उन्हें सौंपा गया है। इसलिए, उन्हें राजा की मेज से प्रतिदिन भोजन और दाखमधु का एक भाग मिलना चाहिए।

और फिर उन्हें तीन साल तक शिक्षित किया जाना है। तो शैक्षिक कार्यक्रम यही है। उस समय के अंत में, उन्हें राजा के सामने खड़ा होना था, या उन्हें राजा की सेवा में काम करना था, और राजा की सेवा में खड़ा होना था।

श्लोक 6 कहता है, इनमें से, यह हमें बताता है कि इन चार युवाओं के अलावा और भी लोग थे जिन्हें बेबीलोन ले जाया गया था। इन सभी कुलीनों में से, ये शाही परिवार जो बाबुल में लाए गए थे, ये चार, दानियेल, हनन्याह, मीशाएल, और यहूदा के गोत्र के अजर्याह थे। तो, हमें ये चार युवा मिल गए हैं जिनका हम अध्याय 1 में अनुसरण करने जा रहे हैं, और फिर अदालत की बाकी कहानियाँ ज्यादातर डैनियल के बारे में हैं, लेकिन तीन दोस्त कुछ बार फिर से दिखाई देंगे।

तो, इन चार के अलावा और भी बहुत कुछ हैं। ध्यान दें कि ये यहूदा के गोत्र से हैं। ये इस्राएली हैं।

ये परमेश्वर के अनुबंधित लोगों के सदस्य हैं। इसलिए, लेखक ने बस उसे वहीं चिपका दिया है ताकि हम भूल न जाएं। और उनके नाम, पाठ आपके लिए इसका वर्णन नहीं करता है। यदि आप हिब्रू जानते हैं या आपने पुराने नियम का अध्ययन करने में कभी समय बिताया है, तो आप जानते हैं कि ये नाम महत्वपूर्ण हैं और उनका अर्थ है।

वे केवल इसलिए नाम नहीं चुनते क्योंकि उन्हें यह पसंद आया। वे एक नाम चुनते हैं, और यह एक वाक्य होता है, आमतौर पर उनके भगवान की स्तुति में। इसलिए, यहोवा दयालु रहा है।

भगवान के समान कौन या कैसा है? यहोवा ने सहायता की है। उनके नाम का मतलब यही है। उन्हें नए नाम दिए गए हैं।

और उन्हें नये नाम क्यों दिये जायेंगे? खैर, आप हिब्रू नामों वाले इन सिविल सेवकों को अपने देवताओं का सम्मान नहीं करवा सकते। तो, आप उन्हें ऐसे नाम देना चाहते हैं जो संभवतः बेबीलोनियाई देवताओं का सम्मान करते हों, हालाँकि हम निश्चित नहीं हैं कि नए नामों का क्या अर्थ है। लेकिन वे इस बात का प्रतीक होंगे कि वे अब इस अलग राजा के अधीन हैं।

वे बेबीलोन के राजा, एक नए राजा, एक नए राष्ट्र और नए देवताओं के अधीन हैं। यह वास्तव में एक सामान्य अदालती बात थी जो तब घटित होती जब उन्हें बंदी बना लिया जाता। यह उनके अच्छे बेबीलोनियाई बनने का प्रतीक है।

यह एक संकेत है कि उनके पास नया स्वामित्व है। वे बेबीलोन के हैं। तो, श्लोक 7 के अंत तक, हमारे पास यहोवा के कुछ मंदिर के बर्तन और उसके कुछ मानव जहाज भी हैं जो शाही दरबार की ओर जा रहे हैं।

दानियेल 1 पद 8 हमें वास्तविक कथानक में ले जाता है। सभी श्लोक 1 से 7 तक, उन्हें स्थापित किया गया था। तो अब हम कथानक में हैं।

डैनियल एक निर्णय लेता है, और वह राजा के भोजन या उसके द्वारा पी गई शराब से खुद को अशुद्ध नहीं करने का संकल्प लेता है। खैर, हम जानते हैं कि डैनियल ने क्या किया। वह राजा के भोजन से स्वयं को अपवित्र नहीं करना चाहता था।

वह इसे नहीं खाना चाहता था। और हम जानते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया, क्योंकि उसकी गहरी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता थी। लेकिन हम वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि भोजन अपवित्र क्यों हो रहा होगा।

इसलिए, हम जानते हैं कि उसने यह निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उसने भोजन और शराब को अशुद्ध माना था। हम नहीं जानते कि भोजन क्यों अशुद्ध था। पुराने नियम में अशुद्ध करने वाली चीजों के बारे में हमारे पास सभी तरह के विचार हैं।

लैव्यव्यवस्था और यहजेकेल में ऐसी शिक्षा दी गई है। इसका संबंध उन चीजों से है जो धार्मिक दृष्टि से शुद्ध नहीं हैं और मंदिर में इस्तेमाल के लिए स्वीकार्य नहीं हैं। और होशे के अनुसार, कम से कम, किसी विदेशी देश में रहना अपने आप में अपवित्रता थी।

इसलिए, उन्होंने जो कुछ भी किया वह अपवित्र था। लेकिन डैनियल ने विशेष रूप से भोजन के बारे में चुनाव किया। उन्होंने नए नामों का विरोध नहीं किया।

उन्होंने शिक्षा का विरोध नहीं किया। लेकिन जिस भोजन पर वे अपना पक्ष रखते हैं, उसका विरोध किया। इस बात पर बहुत से अलग-अलग विचार हैं कि इस भोजन को अपवित्र क्यों बनाया गया होगा।

दिन के अंत में, हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं, लेकिन मैं आपको कुछ सुझाव बताता हूँ। यह संभव है कि डैनियल ने भोजन लेने से मना कर दिया क्योंकि यह महल से आया था और महल का भोजन मंदिर के रास्ते से आता होगा। और अगर यह मंदिर से आया था, तो इसे मूर्ति को चढ़ाया गया होगा।

लेकिन यहाँ समस्या यह है कि यह सब्जियों के लिए भी सच होता। महल का सारा खाना मंदिर से आता था और इसलिए, यह अपवित्र होता। इसलिए, जब तक वे कुछ भी नहीं खाएँगे, तब तक यह समस्या हल नहीं होती।

एक और संभावना यह है कि महल, बेबीलोनियन महल, ने निश्चित रूप से टोरा में खाद्य कानूनों का पालन नहीं किया होगा। वे चीजें जो बनतीं, या वे कौन से जानवर खा सकते थे, कौन से नहीं खा सकते थे, आपको किसी जानवर को कैसे मारना था, टोरा के अनुसार ऐसा करने के कुछ निश्चित तरीके हैं। जाहिर है, बेबीलोनियन महल को उन चीजों से कोई सरोकार नहीं रहा होगा, इसलिए वह अपवित्र हो गया होगा।

लेकिन समस्या यह है कि डैनियल ने मांस और शराब को अपवित्र माना। तो फिर शराब अपवित्र क्यों करती होगी? टोरा में इस बारे में कुछ भी नहीं है कि शराब अपवित्र क्यों होती होगी। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि जानवर समस्या का केन्द्र बिन्दु हैं।

तो शायद उसने मना कर दिया क्योंकि राजा के महल से मांस और शराब उत्सव के भोजन थे। और इसलिए, अगर दानियेल उनसे दूर रहता, तो वह निर्वासन में होने के कारण होने वाले शोक को दर्शाता। कैद में किसी व्यक्ति के लिए उत्सव मनाना या उत्सव के भोजन करना उचित नहीं है।

और यह भी एक ऐसा भोजन है जो कुलीन वर्ग के लिए उपयुक्त है, और डैनियल वास्तव में किसान भोजन, सब्जियाँ माँग रहा है। यह सच हो सकता है, लेकिन यह नहीं बताता कि यह क्यों अपवित्र है। यह सिर्फ इतना कहता है कि शायद वह इसे खाना नहीं चाहता था क्योंकि यह त्यौहार का भोजन था, लेकिन यह अपवित्र नहीं है।

यहाँ कुछ अन्य विकल्प भी हैं। आखिरकार, मुझे टेम्पर लॉन्गमैन का समाधान पसंद आया। टेम्पर का मानना है कि भोजन को अस्वीकार करके या वे कौन सा भोजन खाते हैं, इस पर नियंत्रण रखकर हिब्रू युवा यह निर्णय ले रहे थे कि उनका भरण-पोषण कौन कर रहा है।

इसलिए, यदि वे गरिष्ठ भोजन, राजा की मेज के स्वस्थ भोजन और राजा की मेज के सर्वोत्तम भोजन से दिन में तीन बार जीवित रहते हैं, तो उन्हें यह अनुस्मारक मिलता है कि वे राजा पर निर्भर हैं। वही उन्हें खाना खिलाता है। उसे अस्वीकार करके और उसकी जगह सब्जियाँ चुनकर,

जिसे उस दिन शीर्ष आहार नहीं माना जाता था, उन्हें हर बार रात के खाने की घंटी बजने पर याद दिलाया जाता है कि भगवान ही है जो उन्हें बनाए रखता है।

वे राजा का समृद्ध भोजन नहीं खा रहे हैं। वे सिर्फ सब्जियां खा रहे हैं। अब फिर, यह इसकी अपवित्र प्रकृति की व्याख्या नहीं करता है।

भोजन से इनकार करने के पीछे उनकी प्रेरणा जो भी रही हो, बड़ा मुद्दा धार्मिक है। ठीक है? इसका संबंध दैवीय पोषण बनाम मानव पोषण से है। ये युवा किस पर निर्भर हैं, या वे जीविका के लिए किस पर निर्भर हैं? उन्हें कौन बनाए रखेगा? मैं यहां बस एक छोटी सी चेतावनी देना चाहता हूँ।

यह कोई आहार योजना नहीं है। यह बाइबल हमें नहीं बताती कि हमें कैसे खाना चाहिए। और सब्जियां स्वास्थ्यवर्धक होती हैं।

मैं इससे सहमत हूँ। मुझे लगता है कि उन्होंने शायद कुछ मायनों में अच्छा विकल्प चुना है। लेकिन यह बाइबल हमें नहीं बता रही है कि हमें डैनियल के आहार का पालन करने की आवश्यकता है।

बाइबिल की कथा चीजों का वर्णन करती है। यह हमारे लिए कहानियों का वर्णन करता है। यह उस चीज़ का वर्णन करता है जो डैनियल ने हमारे लिए किया।

यह यह निर्धारित नहीं कर रहा है कि हमें क्या करना चाहिए। इसलिए, यदि आप अधिक सब्जियाँ खाना चाहते हैं, तो आपका डॉक्टर खुश होगा। आप खुश रहेंगे।

कभी-कभी अधिक सब्जियाँ आपके लिए बेहतर होती हैं। लेकिन इसलिए नहीं कि डैनियल की किताब आपको ऐसा बताती है। अब हम इसे एक तरफ रख देंगे।

ठीक है। तो, सवाल शायद यह नहीं है कि उन्होंने इससे इनकार क्यों किया। हम जानते हैं कि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह अपवित्र था।

हम ठीक से नहीं जानते कि यह अपवित्र क्यों हो रहा था। सवाल यह है कि कौन? वे अपने भरण-पोषण के लिए किस पर निर्भर हैं? ठीक है।

श्लोक 9. तो यहाँ हम दानिय्येल को राजा के अधिकारियों के साथ बातचीत करते हुए देखते हैं। और इसलिए, वह हिजड़ों के मुखिया से अनुमति मांगता है कि ऐसा न करें, इसे न खाएं। और फिर यह कहता है, और परमेश्वर ने खोजोंके प्रधान की दृष्टि में दानिय्येल पर अनुग्रह और दया की।

तो, फिर अगली चीज़ जो मैं पढ़ने की उम्मीद करता हूँ वह यह है कि, उन्होंने डैनियल से कहा, ठीक है, मैं आपके अनुरोध का सम्मान करूंगा। सही? डैनियल एक अनुरोध करता है। पाठ कहता है कि भगवान ने उस पर अधिकारी की कृपा की।

अधिकारी को कहना चाहिए ठीक है. ऐसा नहीं होता है. परमेश्वर ने दानिय्येल पर अनुग्रह किया, और खोजोंके प्रधान ने कहा, मैं राजा से डरता हूं।

मैं यह नहीं कर सकता. इसलिए भले ही परमेश्वर ने दानिय्येल को इस खोजे पर अनुग्रह दिया, परन्तु उसने दानिय्येल के अनुरोध को पूरा नहीं किया। यह कुछ दिलचस्प है.

यह अध्याय में दूसरी बार भी है कि परमेश्वर ने कुछ दिया है। सबसे पहले, उसने अपने राजा को नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप दिया। अब, वह दानिय्येल को उनके ऊपर के अधिकारी की नज़र में अनुग्रह और दया दे रहा है।

परमेश्वर बड़ी चीज़ों और छोटी चीज़ों पर नियंत्रण रखता है। सबसे पहले परमेश्वर ने विश्व इतिहास दिया, है न? यह नबूकदनेस्सर का प्रभुत्व है, यरूशलेम का पतन। परमेश्वर ने इसे नबूकदनेस्सर के हाथ में दे दिया।

इस बार, परमेश्वर ने दानिय्येल को उसके अधिकारियों के साथ अनुग्रह प्रदान किया। यह संभव है कि दरबारी जानता था कि दानिय्येल जो माँग रहा था, उसे राजद्रोह के रूप में समझा जा सकता था। और इसलिए दानिय्येल के लिए जो अनुग्रह उसने किया था, उसका मतलब था कि उसने उसे जाने दिया।

वह उसके अनुरोध का सम्मान नहीं कर सका, लेकिन उसने उसे दंडित भी नहीं किया। तो, डैनियल, डैनियल क्या करता है? खैर, वह बुद्धिमानी से काम करता है। बुद्धिमानी सही काम करने का सही तरीका ढूँढना है।

और इसलिए, डैनियल को सही बात पता है। वह वह खाना नहीं खा सकता। उसे ऐसा करने का कोई तरीका ढूँढना होगा।

इसलिए, वह दूसरे अधिकारी के पास जाता है, जो उनके ठीक ऊपर है, और कहता है, अपने सेवकों को 10 दिन तक परखें। हमें खाने के लिए सब्जियाँ और पीने के लिए पानी दिया जाए। तो अब वह सिर्फ़ 10 दिन निकाल रहा है।

मुझे 10 दिन का समय दीजिए। यह एक अलग अधिकारी है, शायद एक जूनियर अधिकारी। यह शायद इतना समय है कि अगर सब्जियाँ काम नहीं कर रही हों तो कुछ अंतर हो सकता है, लेकिन इतना भी नहीं कि शायद दूसरे लोगों को संदेह हो।

और यह अधिकारी क्या करता है? उसने उनकी बात सुनी, 10 दिनों तक उनका परीक्षण किया। यह नहीं कहा गया है कि भगवान ने उस पर कृपा की। बस इतना कहा गया है कि उस आदमी ने उसकी बात सुनी।

यह हमें नहीं बताता कि क्यों। मैंने टिप्पणीकारों को सुना है, और मैं उनमें से एक हूँ, आश्चर्य है कि शायद राजा की मेज से सब्जियों के लिए समृद्ध मांस और शराब की उन चार सर्विंग्स को बदलने से, उस अधिकारी को उन भोजन को घर ले जाना पड़ा। शायद।

तो, उसे इसमें से थोड़ा वेतन मिला। शायद। यह पाठ में नहीं है।

यह सिर्फ कल्पना है। लेकिन डैनियल स्थिति से अपना रास्ता निकाल लेता है। उसने राजा का भोजन न खाने का निश्चय कर लिया।

उसने सबसे पहले मना कर दिया है। वह किसी अन्य व्यक्ति के साथ दूसरा दृष्टिकोण आजमाता है। वह वही करके सफल होता है जो सही है, और वह इसे बुद्धिमानी और व्यवहारकुशल तरीके से करता है, और डैनियल का सम्मान किया जाता है।

वह जुझारू नहीं है। वह अप्रिय नहीं है। वह बुद्धिमान है।

तो, निस्संदेह, इसका नतीजा यह है कि डैनियल और उसके दोस्त, इस 10-दिवसीय परीक्षण के अंत में, 10 गुना बेहतर निकले, जो शायद कुछ अच्छी अतिशयोक्ति है, क्योंकि आप वास्तव में इसे कैसे मापेंगे? वे किसी भी अन्य व्यक्ति और अन्य सभी युवाओं से कहीं बेहतर हैं। तो यह हमें पद 17 पर ले जाता है, और यहां हमें ईश्वर द्वारा दी गई तीसरी घटना मिलती है। इसलिए जहां तक इन चार युवाओं की बात है, भगवान ने उन्हें सभी साहित्य और ज्ञान में शिक्षा और कौशल दिया।

भगवान उनके निर्वासन जीवन में शामिल हैं। वह उस बड़ी घटना में शामिल थे जिसने उन्हें वहां पहुंचाया। वह शामिल था क्योंकि डैनियल सही काम करने के लिए अपना रास्ता तलाशने की कोशिश कर रहा था, और अब वह उन्हें इस विदेशी वातावरण में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए वास्तव में विशेष कौशल और क्षमताएं देने में शामिल है।

हमें बताया गया है कि डैनियल के पास समझ, सपने और सपने थे, और यह वास्तव में हमें अगले कई अध्यायों के लिए तैयार करेगा। अध्याय 2 में क्या होता है? राजा के पास एक दूरदृष्टि है। वह नहीं जानता कि इसका क्या मतलब है।

डैनियल करता है, और जब हम 7 तक पहुँचते हैं, जो वास्तव में काफी दिलचस्प है, डैनियल के पास बहुत सारे दृश्य हैं जिन्हें वह समझ नहीं पाता है, लेकिन हम अभी 7 तक नहीं पहुँचे हैं। तो, वे राजा के सामने खड़े हैं। वे राजा की सेवा में आते हैं, और वे वफादार सेवक होते हैं, और राजा उन्हें बाकी सब से बेहतर, अपने सभी सेवकों से बेहतर पाता है।

तो, हमारे पास कथा अध्यायों के लिए यह रूपरेखा है। यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में वह वहीं रहा, और दानियेल कुसू के राज्य के पहिले वर्ष तक वहीं रहा, और राजा के दरबार में सेवा करता रहा। यह पहला अध्याय पूरी किताब का परिचय है।

हम पात्रों से मिलते हैं। हमें सभी घटनाओं का संदर्भ मिलता है। हम वास्तव में कुछ प्रमुख विषयों को चुन सकते हैं, और हमारे पास प्रश्नों की एक श्रृंखला है।

तो, यह अध्याय और यह पुस्तक निर्वासित और प्रवासी लोगों के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नों के एक पूरे समूह का उत्तर देने जा रही है। कैसे, इन लोगों के लिए जिन्होंने अपनी मातृभूमि खो दी है, उन्होंने अपना मंदिर खो दिया है, उन्होंने अपना राजा खो दिया है, ऐसा प्रतीत होता है कि उनका भगवान खो गया है, वे सोच रहे होंगे कि हम ऐसे भगवान में कैसे विश्वास करें जो यरूशलेम को गिरने देता है? हम निर्वासन में क्या कर रहे हैं? हमारा भगवान कैसे हार गया? खैर, डेनियल 1 कहता है कि आपका भगवान नहीं हारा। तुम्हारे भगवान ने तुम्हें पलट दिया।

इसमें यह नहीं बताया गया है कि ऐसा क्यों किया गया। इसके लिए आपको अध्याय 9 तक इंतजार करना होगा, लेकिन हमारे युवाओं का क्या होगा जो इस विदेशी जीवनशैली में ढल रहे हैं? खैर, भगवान उन्हें सफलता देते हैं। अब, यह कोई वादा नहीं है जो होने वाला है, लेकिन यह एक प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है कि, ठीक है, उन्हें उनकी मातृभूमि से निकाल दिया गया था, लेकिन भगवान उन पर नज़र रख रहे हैं।

भगवान उन्हें अनुग्रह दे रहे हैं। क्या वे अपवित्रता से बच सकते हैं और अपने अधिपतियों को संतुष्ट कर सकते हैं? जाहिर है, वे कर सकते हैं। भगवान कैसे काम कर रहे हैं? भगवान कैसे जीतेंगे? भगवान कभी-कभी खुद को बुरा क्यों दिखाते हैं? हम निर्वासन में कैसे रह सकते हैं? इस शुरुआती अध्याय में हमारे सामने कई तरह के बड़े विचार और सवाल रखे गए हैं, जिनसे बाकी किताब में बातचीत होगी।

उनमें से कुछ का उत्तर यह देगा। उनमें से कुछ के बारे में यह हमारे सोचने के लिए प्रश्न छोड़ देगा, लेकिन मुख्य विषय यह है कि हमारे पास परमेश्वर की संप्रभुता है। परमेश्वर ने दिया।

भगवान ने दिया. भगवान ने दिया. यह इतिहास, बड़े इतिहास और लोगों के जीवन, केवल छोटे लोगों के जीवन में काम करने वाला ईश्वर का संभावित हाथ है।

मुझे यह बहुत उत्साहवर्धक लगता है। मुख्य समाचार में ईश्वर कार्य कर रहा है, और ईश्वर मेरे छोटे से जीवन में कार्य कर रहा है। भगवान सभी घटनाओं में प्रेरक शक्ति है, और हमारे पास छोटे जी भगवान बनाम बड़े जी भगवान का विषय है।

ये बेबीलोन के देवता हैं, दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के देवता बनाम इज़राइल के देवता, जो हार गए प्रतीत होते हैं, लेकिन हमारे पास एक छोटा के राजा बनाम एक राजधानी के राजा है। हमारे पास निर्वासन में फल-फूल रहे वफादार सेवक हैं। कई मायनों में, डेनियल की किताब आस्था और संस्कृति के विचार के साथ खेलती है।

ऐसी संस्कृति में जो ईश्वर-विरोधी है, हम ईश्वर के प्रति निष्ठापूर्वक कैसे रहें? यह इस पहले अध्याय में प्रश्न का उत्तर देता है, कम से कम, यह कहकर कि ईश्वर वहाँ है। भगवान सक्रिय है. भगवान शामिल है.

ईश्वर का विधान निर्वासन में भी कार्य कर रहा है। वास्तव में यह संघर्ष किसके बीच है? क्या यह डैनियल और उसके अधिपतियों के बीच है? क्या यह यहोयाकीम और नबूकदनेस्सर के बीच है? नहीं, यह भगवान और छोटे जी देवताओं के बीच है।

डैनियल अध्याय एक की पुस्तक हमें बताती है कि जिसने पहले ही ईश्वर की संप्रभुता को जीत लिया है। परमेश्वर ने ये सब वस्तुएँ नबूकदनेस्सर के हाथ में दे दीं। हम अपने अगले व्याख्यान में अध्याय दो पर वापस आएंगे।

यह डैनियल की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. वेंडी विडर हैं। यह सत्र 4 है, डैनियल 1।